संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ मार्च २०२४
वर्ष : ३३ अंक : ९ (निरंतर अंक : ३७५)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज का प्राकट्य दिवस : ४ अप्रैल ११

भगवान श्रीरामजी का अवतरण दिवस 'श्रीराम नवमी' : १७ अप्रैल २०

श्री हनुमानजी का प्राकट्य दिवस : २३ अप्रैल २४

रामराज्य लाना है तो पहले बापूजी को रिहा करो ! १७

- श्री प्रदीप भाई शास्त्री, कथा-प्रवक्ता

निर्दोष संत को राहत नहीं... ! ९

- तपस्वी छावनी पीठाधीश्वर जगद्गुरु परमहंस आचार्य

आतंकवादियों तक को सुविधा किंतु एक संत को जीवन-रक्षा हेतु नहीं कोई राहत !

- श्री अश्विनी उपाध्याय, अधिवक्ता, उच्चतम अदालत ६

मेडिकल ग्राउंड व मानवता के आधार पर आशारामजी बापू को बेल मिलनी ही चाहिए

- कीर्ति आहूजा, अधिवक्ता, उच्चतम अदालत ५

अमृततुल्य गोदुग्ध के अनुपम लाभ ३०

चिंता व झगड़े दूर, मिले सुख व पुण्य भरपूर ३४

८६ वर्ष की उम्र, निरंतर गिरता स्वास्थ्य...

पूज्य बापूजी की शीघ्र रिहाई के लिए

बुलंद होती आवाज

आचार्य कौशिकजी, कथा-प्रवक्ता : देश में कई बड़े-बड़े अपराध जिन लोगों ने किये वे जमानत पर बाहर आ गये परंतु जो स्वस्थ नहीं हैं और जिनका कोई सच्चा केस नहीं है वे जमानत पर भी बाहर नहीं आ पा रहे हैं तो इसमें कुछ गड़बड़ी-सी दिखती है। आशारामजी को राहत मिलनी चाहिए।

महंत जयरामदासजी, प्रमुख, श्रीराम आश्रम, अयोध्या : जिन बापूजी ने समाज का हर व्यक्ति स्वस्थ व सच्चरित्रवान रहे इसके लिए अथक प्रयास किये, जीवनभर दूसरों का आयुर्वेद से इलाज करवाया, उनको आज अनुकूल उपचार की भी सुविधा नहीं दी जा रही है ! यदि इतने बड़े संत के साथ कोई भी घटना घटी तो यह देश माफ नहीं करेगा।

स्वामी आनंद स्वरूपजी, अध्यक्ष, शंकराचार्य ट्रस्ट : आशारामजी बापू के खिलाफ बहुत बड़ा षड्यंत्र हुआ है और इसमें बड़े-बड़े लोग सम्मिलित हैं। न्यायपालिका भी जानती है कि सीधे तौर पर उनके मुकदमे में कहीं भी रेप की पुष्टि नहीं है। इन निर्दोष संत को तत्काल बाहर करना चाहिए।

श्री प्रफूल भाई शुक्लजी, कथा-प्रवक्ता : जो लोग मांस खाते थे, शराब पीते थे, उलटे मार्ग पर जा रहे थे, ऐसे करोड़ों लोगों को पूज्य बापूजी ने सन्मार्ग पर लगाया है। बड़े-बड़े लोगों ने, पूर्व न्यायाधीशों ने, बुद्धिजीवियों ने कहा है कि यह पूज्य बापूजी के ऊपर एक षड्यंत्र किया गया है। आज नहीं तो कल सबको स्वीकार करना पड़ेगा कि पूज्य आशारामजी बापू निर्दोष हैं।

श्री अरविंद कारियाजी, कथावाचक : बापू आशारामजी साक्षात् सद्गुरु हैं और निश्चित ही आज सद्गुरु का अनादर हो रहा है। उन्होंने पूर्व में सनातन धर्म को जागृत करने के लिए जो काम किया उसी वजह से आज रामजी अयोध्या में स्थापित हुए हैं। ऐसे संत को दोषी ठहराना ठीक नहीं।

श्री अजय भाई जानीजी, कथावाचक : भारत में रामराज्य की स्थापना हेतु ठोस कार्य यदि किसीने किया है तो वे आशारामजी बापू हैं। रामराज्य लाने के लिए आशारामजी बापू का बाहर आना जरूरी है।

डॉ. ए. पी. सिंह, वरिष्ठ अधिवक्ता, उच्चतम अदालत एवं राष्ट्रीय महासचिव, बी.एस.के. लॉयर्स फेडरेशन : संत आशारामजी बापू ने सदैव सनातन संस्कृति की रक्षा के लिए तमाम विपरीत परिस्थितियों में भी कठोर परिश्रम किया, जिससे राजनीति के चलते आज वे जोधपुर जेल में हैं। उन पर लगाया गया केस झूठा है, मनगढ़ंत है, साजिशन है।

साध्वी यशोदा दीदी, वैदेही संस्कार धाम : संत-समाज की ओर से मैं सरकार से यही कहना चाहती हूँ कि बापूजी का स्वास्थ्य जल्दी-से-जल्दी ठीक हो ऐसी सुविधा, व्यवस्था उन्हें प्रदान की जानी चाहिए।

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड, अंग्रेजी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : ३३ अंक : ९ मूल्य : ₹ ७
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३७५
प्रकाशन दिनांक : १ मार्च २०२४
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
फाल्गुन-चैत्र, वि.सं. २०८०

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर हमारी जिम्मेदारी नहीं रहेगी। **अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट [‘हरि ओम मैन्युफेक्चरर्स’** (Hari Om Manufactureres) **के नाम अहमदाबाद में देय] द्वारा ही भेजने की कृपा करें।**

सम्पर्क पता : ‘ऋषि प्रसाद’, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ६१२१०८८८
केवल ‘ऋषि प्रसाद’ पूछताछ हेतु : (०७९) ६१२१०७४२
९५१२०८१०८१ 'Rishi Prasad'
ashramindia@ashram.org
www.ashram.org www.rishiprasad.org
www.asharamjibapu.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	शुल्क
वार्षिक	₹ ७५
द्विवार्षिक	₹ १४०
पंचवार्षिक	₹ ३४०
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ७५०

विदेशों में

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ६००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ १२००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ ३०००	US $ 80
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६०००	US $ 200

Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस अंक में...

❖ **सेवा सुवास** ❋ ...तभी सच्ची सेवा होगी - स्वामी अखंडानंदजी ४
❖ **मेडिकल ग्राउंड व मानवता के आधार पर आशारामजी बापू को बेल मिलनी ही चाहिए** - कीर्ति आहूजा, अधिवक्ता, उच्चतम अदालत ५
❖ **देशद्रोहियों, आतंकवादियों को भी मानवाधिकारों के नाम पर सुविधा किंतु एक संत को जीवन-रक्षा हेतु नहीं कोई राहत !** - श्री अश्विनी उपाध्याय, अधिवक्ता, उच्चतम अदालत ६
❖ **रानी की युक्ति से राजा की मुक्ति** ७
❖ **निर्दोष संत को राहत नहीं... !** - जगद्गुरु परमहंस आचार्य ९
❖ **सफलता का महाविज्ञान** १०
❖ **शाहों के शाह साँईं लीलाशाह !** ११
❖ **यही एक अभिलाष हमारी** - संत पथिकजी १२
❖ **शुद्ध अनन्य भाव से सब सम्भव** १३
❖ **भक्तों के अनुभव** ❋ गुरुदेव के स्वास्थ्य हेतु किये जप-अनुष्ठान का जादुई प्रभाव ! - नोहर पाल १३
❖ **पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग**
❋ कृपालु गुरुदेव ने प्रतिकूल परिस्थिति से उबारा - धीरज चव्हाण १४
❋ अपने स्वास्थ्य की ऐसी नाजुक स्थिति में भी रखते इतना खयाल ! १५
❖ **आप कहते हैं...** ❋ रामराज्य लाना है तो पहले बापूजी को रिहा करो ! - श्री प्रदीप भाई शास्त्री, कथा-प्रवक्ता १७
❖ **विद्यार्थी संस्कार** ❋ एक ऐसा भी बालक... १८
❋ गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज हुए गुरुकुल के छात्रों के नाम १९
❖ **मनुष्य-देह : एक दुर्लभ अवसर** - संत तुकारामजी १९
❖ **पर्व मांगल्य** ❋ श्रीरामजी, दशरथजी और कौसल्याजी का तात्त्विक अर्थ २०
❖ **तत्त्व दर्शन** ❋ अन्नमय कोष साक्षी विवेक - स्वामी अखंडानंदजी २२
❖ **पूज्य बापूजी की प्रेरणा से लगा २७वाँ ‘गंगासागर तीर्थयात्री सेवा शिविर’** २३
❖ **पर्व मांगल्य** ❋ हनुमानजी का स्वभाव अपने जीवन में ले आओ ! २४
❖ **संतों की हितभरी अनुभव-वाणी** २६
❖ **गोरक्षासन** २७
❖ **सच्चे हृदय से किये संकल्प की पूर्ति परमात्मा अवश्य करते हैं** २८
❖ **शरीर स्वास्थ्य** ❋ अमृततुल्य गोदुग्ध के अनुपम लाभ ३०
❋ धातु की दुर्बलता में लाभकारी प्रयोग ३१
❖ **मातृ-पितृ पूजन दिवस पर शुभकामना संदेश** ३२
❖ **भागवत कथा में किया मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम अभिव्यक्त की बापूजी के प्रति कृतज्ञता** ३३
❖ **अनमोल कुंजियाँ** ❋ चिंता व झगड़े दूर, मिले सुख व पुण्य भरपूर ३४

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

अनादि TV: रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे टाटा प्ले (चैनल नं. ११६१), एयरटेल (चैनल नं. ३७९) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबल

DIGIANA DIVYA JYOTI: रोज रात्रि १० बजे म.प्र. में ‘डिजियाना’ केबल (चैनल नं. १०९)

सेवाकार्य भी

Asharamji Bapu | Asharamji Ashram | Mangalmay Digital

यूट्यूब चैनल्स

डाउनलोड करें : Rishi Prasad App (ऋषि प्रसाद की ऑनलाइन सदस्यता हेतु), Rishi Darshan App (ऋषि दर्शन विडियो मैगजीन की सदस्यता हेतु) एवं Mangalmay Digital App

रानी की युक्ति से राजा की मुक्ति – पूज्य बापूजी

भारत की नारियों ने गजब का योग कमाया है, गजब की साधना की है ! श्री योगवासिष्ठ महारामायण में राजा शिखिध्वज (शिखरध्वज) और रानी चूडाला का आख्यान आता है वह तुम पढ़ो तो पता चलेगा कि नारियों ने कितनी उन्नति की है !

राजा शिखिध्वज विद्वान थे, रानी चूडाला भी विदुषी थी । राजा विद्वान थे पर साथ में थोड़ी संसार की आस्था भी थी और चूडाला सद्गुरु के उपदेश से साधन-भजन करके शिव-तत्त्व की समाधि में पहुँच गयी थी ।

हमारे शास्त्रों ने गुणों का पूजन किया है । स्त्री में अगर आध्यात्मिकता बढ़ती है तो पुरुष स्त्री का आदर करता है और पुरुष में अगर आध्यात्मिकता बढ़ती है तो स्त्री पुरुष का आदर करती है ।

राजा का अज्ञान दूर हो इसलिए चूडाला एक दिन अपना रहस्य बताते हुए कहती है : ''स्वामी ! आपके राज्य की तो सीमा है पर मेरे राज्य की कोई सीमा नहीं है । मैंने ऐसा राज्य पाया है कि बिना सैनिकों के उसकी रक्षा होती है । ऐसा पद पाया है जो सबका आधार है, सबका आत्मा है । ऐसा अमृत पाया है कि जहाँ देवताओं का अमृत फीका हो जाता है ।''

पति नाराज हुए कि 'यह स्त्री पागलों की तरह क्या बोलती है !'

चूडाला ने देखा कि 'राजा को आत्मज्ञान सुनने का अधिकार नहीं है ।' ब्राह्मणों और मंत्रियों को कहा : ''राजा का विवेक-वैराग्य जगे ऐसा उनको उपदेश दो । 'संसार में कुछ सार नहीं, मृत्यु आकर गला दबा दे उसके पहले तुम परमात्मा को पा लो ।' ऐसा ज्ञान दिया करो ।''

राजा चला जंगल की ओर...

रानी और ब्राह्मण राजा को विवेक-वैराग्य का उपदेश देते । राजा को वैराग्य हुआ है । एक रात उसने जंगल का रास्ता लिया । आधी रात के बाद रानी उठी । राजा को न पाकर योग में स्थित हो आकाश को उड़ी और देखा कि राजा चला जा रहा है । सोचा कि 'राजा को ज्यों-ज्यों पकड़ने जाऊँगी त्यों-त्यों समझेंगे कि यह स्त्री विघ्न है । राजा के कषाय परिपक्व नहीं हुए हैं (दूषित मनोविकार दूर नहीं हुए हैं अर्थात् अंतःकरण शुद्ध नहीं हुआ है), अभी इनको तपस्या करने दो ।'

रानी राज्य में आयी और घोषणा कर दी : ''राजा तीर्थयात्रा के लिए गये हैं इसलिए राज्य का कार्यभार मैं सँभालूँगी ।''

रानी दिन में राजपाट सँभाले और रात्रि को समाधि करे । राजा को तप करते-करते ८ वर्ष बीत गये । रानी ने समाधि लगाकर देखा कि 'भजन-तप से उनके कषाय परिपक्व हुए हैं, हृदय शुद्ध हुआ है । शुद्ध हृदय में उपदेश ठहरेगा । अपवित्र, पापी व्यक्ति को घर बैठे भगवत्कथा, कीर्तन, सत्संग मिले तब भी उसको रुचि नहीं होगी । अब राजा के पाप कट गये हैं तो जाकर उनको जगाऊँ, परमात्म-तत्त्व का उपदेश दूँ ।' फिर सोचा कि 'स्त्री के रूप में जाऊँगी तो बोलेंगे 'फिर मेरे को संसार में फँसाने के लिए रानी आयी है ।' और मेरे को छोड़कर भाग जायेंगे ।'

योगी बनकर दिया उपदेश

रानी ने ध्यान लगाकर युक्ति खोज ली । योगबल से एक योगी का रूप धारण कर लिया । आकाशमार्ग से उड़ते-उड़ते सैकड़ों मील दूरी पर,

शाहों के शाह साँईं लीलाशाह !

साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज के प्राकट्य दिवस पर विशेष

४ अप्रैल (चैत्र कृष्ण पक्ष दशमी) को पूज्यपाद भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज का प्राकट्य दिवस है । आप सभीको इस दिन की बधाई ! पूज्य बापूजी सत्संगों में अपने गुरुदेव के प्रेरक प्रसंग बताते रहे हैं । पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत में आता है :

ठीक व्यवहार तो ज्ञानी ही कर सकते हैं

गुरु माता-पिता दोनों हैं तो पिता का अनुशासन और माँ का प्रेम – दोनों काम भगवान गुरु के द्वारा करवाते हैं । हमारे पूज्यश्री (साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज) **भीतर तरल थे बाहर कठोरा, निर्विकल्प ज्यूँ कागज कोरा ।**

अनुशासन भी इतना कड़ा कि अच्छा-भला भी हिल जाय, ऐसा-वैसा तो टिक ही नहीं सकता था और प्रेम भी ऐसा कि कोई गहराई से समझे तो उनके लिए हृदय पिघले बिना नहीं रहता । मैं तमाम सम्प्रदायों की साधनाएँ देखता-छानता, अनेक राज्यों में देशाटन करता-करता कई बार घर आया, कई बार घर से भागा... ऐसा करते-करते जब देखा उन संतपुरुष को कि टाट में बैठे हैं अपनी आत्मशांति में तो लगा कि कुछ है । फिर कभी उनको देखा कि सभाओं में लोगों के झगड़ों का निपटारा कर रहे हैं, कभी गृहस्थियों को मार्गदर्शन दे रहे हैं तो कभी त्यागियों को त्याग का पाठ पढ़ा रहे हैं... मेरे को लगा कि राजाओं में राजा हैं, जोगियों में जोगी, कर्मियों में कर्मनिष्ठ, त्यागियों में त्यागी हैं ।

हे भगवान ! सबको सद्बुद्धि दो, शक्ति दो, निरोगता दो । सब अपना-अपना कर्तव्य पालें और सुखी रहें । मेरे गुरुदेव यह प्रार्थना करते-करवाते थे ।

ठीक व्यवहार तो ज्ञानी ही कर सकते हैं । दूसरा व्यक्ति तो मोह से, भय से आक्रांत हो जायेगा कि 'अब गुस्सा करूँ, डाँटूँ तो लोग क्या कहेंगे ?' लोग चाहे जो कहें, जिस समय जो करना उचित हो वह करो – ऐसा ज्ञानी का स्वभाव होता है । जिस समय जो उचित है, मोह-ममतारहित, अहंकाररहित जो नैसर्गिकता है उस नैसर्गिकता को गूँजने का मौका निरहंकार हृदय से मिलता है ।

'उलटा पहना है तो क्या, सीधा पहना तो क्या ?'

बाजार में जाते हैं तो हम अपने को भोग्य बना लेते हैं और लोगों को भोक्ता बना देते हैं । वेदांत कहता है, 'न किसीको भोक्ता बनाओ न किसीको भोग्य बनाओ । भोक्ता और भोग्य बनोगे तो रह जाओगे यहीं । तुम तो अनुमंता मात्र★ हो – सहज स्वभाव !... खाने के लिए खाओ, जाने के लिए जाओ, पहनने के लिए पहनो...'

हमारे बाबाजी (साँईं श्री लीलाशाहजी) एक लम्बा कुर्ता पहनते थे । एक बार पाटण में सत्संग कर रहे थे और कुर्ता उलटा पहन रखा था, जेबें बाहर थीं । तो एक डॉक्टर साधक था, उसने कहा : ''स्वामीजी ! हे गुरु भगवान ! आपने कुर्ता उलटा पहना है ।''

गुरुजी बोले : ''चुप, उलटा है तो क्या है !

★ केवल अनुमति देनेवाला, चलते कार्य को होने देनेवाला

श्रीरामजी, दशरथजी और कौसल्याजी का तात्त्विक अर्थ

मंगलमय संदेश
श्रीराम नवमी पर विशेष

१७ अप्रैल को भगवान श्रीरामजी का अवतरण दिवस 'श्रीराम नवमी' है । त्रेतायुग में इसी दिन निर्गुण-निराकार परब्रह्म-परमात्मा अयोध्या में श्रीरामजी के रूप में अवतरित हुए थे । उन श्रीरामचन्द्रजी को हर युग में, हर घर में, प्रत्येक हृदय में अवतरित किया जा सकता है, कैसे ? जानते हैं तत्त्ववेत्ता संत श्री आशारामजी बापू की अनुभवसम्पन्न अमृतवाणी द्वारा :

रामजी का प्राकट्य कहाँ होता है ?

रावण के वध, दैत्य-दानवों के विनाश, धर्म की प्रतिष्ठा एवं सज्जनों के परित्राण यानी सब ओर से रक्षा करने के लिए चैत्र शुक्ल नवमी को स्वयं श्रीहरि रामरूप में अवतीर्ण हुए ।

रामजी कहाँ जन्म लेते हैं ? अयोध्या में, जहाँ लड़ाई-झगड़ा, राग-द्वेष, चिंता, भय, शोक नहीं है, किसीके घर पर ताला नहीं है । 'अयोध्या'... जहाँ युद्ध नहीं, अयुद्ध रहे अर्थात् बुद्धि न काम में फँसे न क्रोध में फँसे, न सफलता में हर्षित हो न विफलता में उद्विग्न हो । जहाँ समता है, शांति है, माधुर्य है, एक-दूसरे को समझने की सुयोग्यताएँ हैं । 'अवध'... जहाँ वध करने या वध की इच्छा रखने वाले लोग नहीं हैं ।

रामजी कहाँ प्रकट होते हैं ? कौसल्या के यहाँ । 'कौसल्या' अर्थात् जो कुशलबुद्धि है । महामति माँ कौसल्या हार-शृंगार में रुचि नहीं रखतीं, एकांत, मौन उनको प्रिय है और गुरुदेव के वचनों में रुचि है ।

वसिष्ठजी महाराज के परम शिष्य दशरथजी भक्तिमार्ग में बहुत आगे थे और मैया कौसल्या की ज्ञानमार्ग में अच्छी प्रगति थी । ऐसी माँ कौसल्या और पिता दशरथजी के घर रामजी का प्राकट्य होना स्वाभाविक है । वे परमेश्वर त्रेतायुग में ही और अयोध्या में ही प्रकट हुए थे ऐसी बात नहीं है, कभी भी, कहीं भी वे प्रकट होते ही रहते हैं ।

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला
कौसल्या हितकारी ।

इसका विशेष प्रचार हुआ इसलिए हम कहते हैं कि भगवान श्रीरामजी का प्राकट्य हुआ । परंतु अगर कोई जीवन में कुमतिनाश करके सुमति की तरफ चल पड़े तो यह भगवान की अत्यंत महती कृपा है और वे भगवान न जाने किस-किस रूप में प्रकट होते रहते हैं ।

यह भारतभूमि का बड़ा प्रभाव है कि जो निर्गुण-निराकार है उसको हम सगुण-साकार करने में सक्षम हो जाते हैं और साकार हमारी उन्नति करने के लिए सब कुछ कर लेता है । ''हाय सीते !... सीते !!... भाई लक्ष्मण ! भाई लक्ष्मण !! जागृत हो जाओ । मैं अकेले अयोध्या कैसे जाऊँगा ? क्या मुँह दिखाऊँगा ?... हनुमान !... हनुमान !!... कुछ उपचार करो । जाओ हिमालय, देर न करो...'' वह निर्गुण-निराकार सगुण-साकार रूप में आकर क्या-क्या लीला करता है !

श्रीरामजी कैसे हैं अद्वितीय ?

संयम में देखो तो रामजी अद्वितीय हैं, वीरों में देखो तो वीरों-के-वीर हैं, सत्यवक्ताओं में

सच्चे हृदय से किये संकल्प की पूर्ति परमात्मा अवश्य करते हैं

संकल्पशक्ति की बहुत भारी महिमा है । ब्रह्मवेत्ता महापुरुष सत्यसंकल्प व सर्वसमर्थ होते हैं और अपना यह सामर्थ्य वे दूसरों के हित में, उनको रोग, शोक, पीड़ाओं और मुसीबतों से बचाने में और उनकी धर्मसम्मत मनोकामनाओं की पूर्ति करने में लगा देते हैं । किंतु आध्यात्मिकता से अनजान लोगों को ऐसा लगता है कि महापुरुष स्वयं के लिए इस सामर्थ्य का उपयोग क्यों नहीं करते ? इसका कारण यह है कि उनके स्वरूप पर रोग, शोक, पीड़ा आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता और उनको यह जगत मिथ्या, स्वप्नतुल्य जान पड़ता है । इसलिए प्रायः अपने लिए संकल्प करने की उनकी इच्छा नहीं रहती । जिन अज्ञानी जीवों को यह जगत सच्चा, ठोस और शाश्वत लगता है ऐसों को दुःख, उद्वेग से बचाने एवं सच्चा सुख दिलाने के लिए प्राणिमात्र का हित चाहनेवाले वे संतजन अपने संकल्प-सामर्थ्य का उपयोग करते हैं; अपने शारीरिक कष्टों आदि की परवाह किये बगैर समाजहित में लगे रहते हैं ।

विश्वहितैषी ब्रह्मवेत्ता महापुरुष की देह भक्तों, सज्जनों के लिए परमात्मा से भी बढ़कर होती है । यह शिष्यों की सबसे बड़ी अनमोल धरोहर होती है क्योंकि सर्वव्यापक परमात्मा सर्वत्र होने पर भी ज्ञान का उपदेश नहीं देते, ब्रह्मस्वरूप सद्गुरु की देह के द्वारा ही शिष्यों को परमात्म-ज्ञान का उपदेश मिलता है । अपने गुरुदेव स्वस्थ रहें, चिरंजीवी रहें और उनके दिव्य ज्ञान एवं ब्रह्मानुभव से समस्त विश्व लाभान्वित हो यही उनके हृदय में सद्भाव होता है । जब वे सीमित मैं को खोकर अंतर्मुख हो के, सच्चे हृदय से सद्गुरु के आरोग्य के लिए प्रार्थना, पुकार, संकल्प, जप करते हैं तो वहाँ असीम परमात्मा का सामर्थ्य प्रकट हो जाता है और शिष्यों के उस संकल्प का प्रभाव बाह्य दूरी को लाँघकर उनके गुरुदेव के श्रीविग्रह तक पहुँच जाता है ।

सच्चे हृदय से सद्गुरु के आरोग्य के लिए प्रार्थना, पुकार, संकल्प, जप करते हैं तो वहाँ असीम परमात्मा का सामर्थ्य प्रकट हो जाता है ।

अहमदाबाद आश्रम में सेवारत एक आश्रमवासी भाई बताते हैं : ''अक्टूबर २००० में पूज्य बापूजी की त्रिनाड़ी शूल (trigeminal neuralgia) की पीड़ा ने भयंकर रूप ले लिया था । उस समय पूज्यश्री ने मौन ले लिया था । साधकों ने बापूजी के स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना, संकल्प व जप शुरू कर दिया ।

जनवरी २००१ में अहमदाबाद आश्रम में उत्तरायण शिविर था । भक्तवत्सल पूज्य गुरुदेव लोगों की दर्शन की प्यास देख अस्वस्थता की ऐसी स्थिति में भी व्यासपीठ पर आ गये । तब गुरुदेव के आरोग्य के लिए मंडप में सामूहिक संकल्प कराया गया था । पूज्यश्री ने व्यासपीठ से नीचे उतरकर भक्तों के संकल्प को ग्रहण किया । परिणामस्वरूप गुरुदेव के स्वास्थ्य में सुधार होने लगा ।

प्रयागराज कुम्भ में २९ जनवरी २००१ को आयोजित सत्संग में बापूजी ने मौन खोला और सबको सत्संग-वचनामृत का रसपान कराया ।''

मातृ-पितृ पूजन दिवस पर शुभकामना संदेश

श्री संतोष पांडेय, सांसद : १४ फरवरी को मनाये जानेवाले मातृ-पितृ पूजन दिवस के विश्वव्यापी अभियान की सफलता के लिए शुभकामनाएँ ! संत आशारामजी बापू के हृदय में ही ऐसे लोक-मांगल्यकारी महान अभियान की परिकल्पना का उदय हो सकता है । इसकी जितनी भी सराहना की जाय वह कम है । सम्पूर्ण विश्व संतश्री की शिक्षाओं से युगों तक उन्नत होता रहेगा । मैं पूज्य बापूजी का आभार व्यक्त करता हूँ ।

श्री रामदास आठवले, केन्द्रीय सामाजिक न्याय व अधिकारिता राज्यमंत्री : आपके संस्थान के द्वारा १४ फरवरी को मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाये जाने के अवसर पर मैं आपकी संस्था को बधाई देता हूँ ।

श्री भूपेन्द्र पटेल, मुख्यमंत्री, गुजरात : वर्तमान समय में माता-पिता के प्रति अपने कर्तव्यों के पालन हेतु जागृति बढ़े और बच्चों में भारतीय संस्कृति के संस्कारों का सिंचन हो सके इसलिए आपके संस्थान द्वारा १४ फरवरी को मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाया जा रहा है, यह सराहनीय है ।

श्री सुखविन्द्र सिंह सुक्खू, मुख्यमंत्री, हिमाचल प्रदेश : मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आपकी संस्था द्वारा हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी १४ फरवरी को मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाया जा रहा है । इसके सफल आयोजन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

श्री शिवप्रताप शुक्ल, राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश : मातृ-पितृ पूजन दिवस भारत के युगों-युगों के इतिहास में एक क्रांतिकारी पहल है । **सबका मंगल, सबका भला –** इस वैदिक सिद्धांत को आत्मसात् करनेवाले इस कार्यक्रम से समाज में सुख-शांति, समृद्धि आयेगी, साथ ही युवा वर्ग नैतिक पतन से बचेगा और भारत विश्वगुरु बनेगा ।

श्री अशोक रावल, क्षेत्र मंत्री, विहिप, गुजरात : मैं तुलसी पूजन दिवस व मातृ-पितृ पूजन दिवस के सफल आयोजन के लिए संत श्री आशारामजी आश्रम का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ और प्रशंसा करता हूँ ।

अच्छे समाज के निर्माण के लिए सभी लोग और सभी संस्थाएँ अपनी-अपनी जगह पर मातृ-पितृ पूजन दिवस मनायें ऐसा मेरा निवेदन है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल, शिक्षा, धार्मिक न्यास, पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री, छत्तीसगढ़ : आपकी संस्था द्वारा पिछले १८ वर्षों से १४ फरवरी को मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाने की परम्परा के फलस्वरूप बाल व युवा वर्ग सर्वोत्कृष्ट उन्नति के मार्ग पर जा रहा है । इस दिवस ने लाखों युवक-युवतियों के जीवन को प्रभावित किया है । मातृ-पितृ पूजन दिवस के आयोजनों हेतु मेरी हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ !

श्री कंवर पाल, शिक्षा, वन एवं पर्यटन मंत्री, हरियाणा : युवा पीढ़ी में **'मातृदेवो भव ।**

पोषक तत्त्वों से भरपूर, स्वाद में लाजवाब

ईरानी मबरूम खजूर

इसमें अनेक खनिज तत्त्व, शर्करा, प्रोटीन्स, फाइबर्स, एंटी ऑक्सीडेंट्स और कई आवश्यक विटामिन्स होते हैं जो शक्ति-स्फूर्ति देते हैं, रक्त, मांस व वीर्य बढ़ाते हैं, विभिन्न रोगों से लड़ने की शक्ति देते हैं तथा कैंसररोधी गुण से युक्त हैं । ये न्यूरोलॉजिकल और मानसिक कार्यों को बेहतर बनाने में भी मदद करते हैं । शरीर का वजन कम या अधिक हो तो इसके सेवन से संतुलित हो जाता है ।

दीर्घायु व यौवन प्रदाता, विविध रोगों में लाभदायी

आँवला रस

यह वीर्यवर्धक, त्रिदोषशामक व गर्मीशामक है । इसके सेवन से आँखों व पेशाब की जलन, अम्लपित्त (hyperacidity), श्वेतप्रदर, रक्तप्रदर, बवासीर आदि पित्तजन्य अनेक विकारों में लाभ होता है ।

पूरे परिवार के उत्तम स्वास्थ्य के लिए

आँवला कैंडी

सेहत और स्वाद का संगम

पुष्कर आश्रम गौशाला से जुड़ी जंगल की शुद्ध भूमि, जो गोधूलि, गौ-खाद, अन्य शुद्ध खाद, अत्यंत शुद्ध जल से सम्पन्न है, उसमें उपजे ताजे आँवलों से तैयार की गयी यह कैंडी स्वास्थ्य एवं साधना में सहायक है । यह स्वादिष्ट, शक्तिप्रद एवं विटामिन 'सी' से भरपूर है । बच्चों को बाजारू टॉफियों से बचाने हेतु यह स्वास्थ्यवर्धक उत्तम विकल्प है ।

स्वास्थ्य-घातक केमिकल रंगों से बचें-बचायें

स्वास्थ्यप्रद व गुणकारी पलाश-फूलों का रंग

✽ सप्तधातुओं व सप्तरंगों को करे संतुलित ✽ सूर्य की तीक्ष्ण किरणों के दुष्प्रभाव से करे रक्षा ✽ रोगप्रतिकारक शक्ति तथा गर्मी सहने की शक्ति को बढ़ाये ✽ कफ एवं पित्त संबंधी बीमारियों व सकष्ट मूत्र-प्रवृत्ति का नाशक ।

देशी गाय के घी, आँवला व अनेक जड़ी-बूटियों से निर्मित

च्यवनप्राश

स्पेशल च्यवनप्राश

केसर, मकरध्वज व चाँदी युक्त

✽ स्मरणशक्ति, बल, बुद्धि, स्वास्थ्य, आयु एवं इन्द्रियों की कार्यक्षमता वर्धक ✽ रोगप्रतिकारक शक्ति, नेत्रज्योति व स्फूर्ति वर्धक ✽ हृदय व मस्तिष्क पोषक ✽ फेफड़ों के लिए बलप्रद ✽ ओज, तेज, वीर्य, कांति व सौंदर्य वर्धक ✽ हड्डियों, दाँतों व बालों को बनाये मजबूत ✽ क्षयरोग में तथा शुक्रधातु के व मूत्र-संबंधी विकारों में उपयोगी ✽ वात-पित्तजन्य विकारों में तथा दुर्बल व्यक्तियों हेतु विशेष हितकर ।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

ऋषियों का अमृतमय ज्ञान ऋषि प्रसाद के माध्यम से घर-घर पहुँचाने का संकल्प

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2024-26
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2026)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/24-26
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st March 2024

करोड़ों दिलों को भाया, सच्चे प्रेम को पाया...

मातृ-पितृ पूजन दिवस

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : ऋषि प्रसाद ऋषि दर्शन लोक कल्याण सेतु

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : धर्मेश जगराम सिंह चौहान **मुद्रक** : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : श्रीनिवास र. कुलकर्णी